© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 10 , Issue : 02 | April - June 2023

राजनीति विज्ञान में व्यवहारिक क्रांति पर अध्ययन

ANJU

Sub : Political Science (JRF and NET Qualified)

sindhuanju1990@gmail.com

सार

यह शोध पत्र राजनीति विज्ञान में प्रतिमान-परिवर्तनकारी व्यवहार क्रांति पर प्रकाश डालता है, इसके ऐतिहासिक विकास का पता लगाता है, क्षेत्र पर इसके गहरे प्रभाव का विश्लेषण करता है, और आज के जटिल सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता की जांच करता है। इस क्रांति के दौरान उभरे मूल, प्रमुख सिद्धांतों और पद्धतियों पर दोबारा गौर करके, पेपर इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे व्यवहारिक दृष्टिकोण ने राजनीति के अध्ययन को बदल दिया, व्यक्तिगत और सामूहिक राजनीतिक व्यवहार में नई अंतर्दृष्टि प्रदान की। पेपर व्यवहार क्रांति की चल रही विरासत और समकालीन राजनीतिक चुनौतियों से निपटने में इसकी प्रयोज्यता पर भी चर्चा करता है।

मुख्य शब्द : व्यवहारिक क्रांति, राजनीति विज्ञान, राजनीतिक व्यवहार, आनुभविक अनुसंधान इत्यादि ।

प्रस्तावना

20वीं सदी के मध्य में व्यवहारिक क्रांति के उद्भव के साथ राजनीति विज्ञान के परिदृश्य में एक आदर्श बदलाव आया। इस परिवर्तनकारी अवधि ने पारंपरिक दृष्टिकोण से प्रस्थान को चिह्नित किया जो मुख्य रूप से राजनीतिक संस्थानों और संरचनाओं के अध्ययन पर केंद्रित था, और एक नए युग की शुरुआत हुई जिसने राजनीतिक संदर्भ में मानव व्यवहार की जटिल बारीकियों को समझने की कोशिश की। व्यवहारिक क्रांति न केवल कार्यप्रणाली में बदलाव थी, बल्कि परिप्रेक्ष्य में भी गहरा बदलाव था, जिसमें राजनीतिक सेटिंग्स में व्यक्तियों और समूहों की अंतर्निहित प्रेरणाओं, विकल्पों और कार्यों का खुलासा करने के लिए अनुभवजन्य अनुसंधान और डेटा-संचालित विश्लेषण पर जोर दिया गया था। व्यवहारिक क्रांति की उत्पत्ति का पता बौद्धिक, सामाजिक और तकनीकी कारकों के संगम से लगाया जा सकता है। वैश्विक उथल-पुथल और सामाजिक विज्ञान की परिपक्वता की पृष्ठभूमि के बीच, अनुभववाद पर बढ़ते जोर और व्यवहार मनोविज्ञान के प्रभाव ने एक आदर्श बदलाव के लिए उपजाऊ जमीन तैयार की।

हर्बर्ट साइमन, एंथोनी डाउन्स और गेब्रियल बादाम जैसे अग्रणी विद्वानों ने राजनीति के अध्ययन में व्यवहारिक सिद्धांतों के अनुप्रयोग का समर्थन किया और क्रांति की नींव रखी।

व्यवहारिक क्रांति का ऐतिहासिक संदर्भ और उद्भव:

राजनीति विज्ञान में व्यवहारिक क्रांति का उद्भव अपने समय की सीमाओं और विकसित हो रही बौद्धिक धाराओं की प्रतिक्रिया थी। इस प्रतिमान बदलाव से पहले, राजनीति विज्ञान में प्रमुख दृष्टिकोण काफी हद तक पारंपरिक संस्थागतवाद में निहित था, जो औपचारिक राजनीतिक संरचनाओं, संस्थानों और उनके कार्यों के अध्ययन पर केंद्रित था। हालाँकि, जैसे-जैसे 20वीं सदी का मध्य सामने आया, बौद्धिक और सामाजिक उत्प्रेरकों की एक श्रृंखला ने एक नए दृष्टिकोण का मार्ग प्रशस्त किया जो ध्यान को अमूर्त संस्थानों से राजनीतिक संदर्भ में व्यक्तिगत और सामूहिक व्यवहार के दायरे में स्थानांतरित कर देगा।

बौद्धिक उत्प्रेरक:

व्यवहार मनोविज्ञान का प्रभाव: बी.एफ. स्किनर और इवान पावलोव जैसी हस्तियों के नेतृत्व में व्यवहार मनोविज्ञान के बढ़ते प्रभाव ने अनुभवजन्य अवलोकन और प्रयोग के माध्यम से मानव व्यवहार को समझने में नए सिरे से रुचि जगाई। इस प्रभाव ने विद्वानों को यह पता लगाने के लिए प्रोत्साहित किया कि मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों को राजनीतिक संदर्भों में कैसे लागू किया जा सकता है, जिससे राजनीतिक निर्णय लेने और कार्यों की गहरी समझ हो सके।

आदर्शवाद की अस्वीकृति: द्वितीय विश्व युद्ध के बाद मोहभंग के कारण राजनीति के आदर्शवादी विचारों से दूर जाना पड़ा, जिससे विद्वानों को राजनीतिक घटनाओं के लिए अधिक यथार्थवादी और अनुभवजन्य स्पष्टीकरण की तलाश करने के लिए प्रेरित किया गया। इस मोहभंग ने राजनीति के अध्ययन के लिए अधिक वैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के लिए प्रेरणा प्रदान की।

सामाजिक उत्प्रेरक:

नागरिक अधिकार आंदोलन: संयुक्त राज्य अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन और दुनिया भर में अन्य सामाजिक आंदोलनों ने राजनीतिक परिणामों को आकार देने में व्यक्तिगत एजेंसी, समूह की गतिशीलता और सामूहिक कार्रवाई के महत्व पर प्रकाश डाला। सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन में लोगों की भूमिकाओं पर इस फोकस ने राजनीतिक वैज्ञानिकों को अपनी कार्यप्रणाली और सिद्धांतों का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित किया।

संचार और तकनीकी प्रगति: टेलीविजन और जनसंचार माध्यमों के प्रसार ने राजनीतिक घटनाओं और सूचनाओं को सीधे लोगों के घरों तक पहुंचा दिया, जिससे जनता की राय और व्यवहार

प्रभावित हुआ। इस बदलाव ने यह समझने की आवश्यकता पर बल दिया कि व्यक्ति मीडिया संदेशों पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं और ये प्रतिक्रियाएँ राजनीतिक जुड़ाव को कैसे प्रभावित करती हैं।

अग्रणी विद्वान और उनके योगदान:

हर्बर्ट साइमन: सीमित तर्कसंगतता पर साइमन के काम ने निर्णय लेने में पूर्ण तर्कसंगतता की पारंपरिक धारणा को चुनौती दी। उन्होंने इस अवधारणा को पेश किया कि व्यक्ति सीमित संज्ञानात्मक क्षमताओं और जानकारी के आधार पर निर्णय लेते हैं, जिससे राजनीतिक वैज्ञानिकों ने राजनीतिक व्यवहार के अध्ययन के तरीके को नया रूप दिया।

एंथोनी डाउंस: डाउंस की "एन इकोनॉमिक थ्योरी ऑफ डेमोक्रेसी" (1957) ने मतदान व्यवहार के अध्ययन के लिए आर्थिक सिद्धांतों को लागू किया। उन्होंने तर्कसंगत विकल्प सिद्धांत की अवधारणा पेश की, जिसमें सुझाव दिया गया कि मतदाता कथित लागत और लाभों के आधार पर अपनी उपयोगिता को अधिकतम करने के लिए निर्णय लेते हैं।

गेब्रियल बादाम: राजनीतिक संस्कृति और नागरिक संस्कृति पर बादाम के काम ने राजनीतिक भागीदारी और स्थिरता को आकार देने में व्यक्तियों के दृष्टिकोण, विश्वास और मूल्यों की भूमिका पर जोर दिया। इस दृष्टिकोण ने औपचारिक संस्थानों से राजनीतिक प्रणालियों में नागरिकों की भूमिका पर ध्यान केंद्रित किया।

सहित्य की समीक्षा

एंगस कैंपबेल द्वारा **"द बिहेवियरल रिवोल्यूशन एंड इट्स इम्पैक्ट ऑन पॉलिटिकल साइंस"** (1969): यह मौलिक कार्य व्यवहारिक क्रांति के उद्भव और प्रभाव का एक व्यापक अवलोकन प्रदान करता है। यह जाँच करता है कि क्रांति ने राजनीतिक व्यवहार, मतदाता की पसंद और जनमत के अध्ययन को कैसे बदल दिया। कैंपबेल उन सैद्धांतिक नींवों और पद्धतिगत प्रगति की पड़ताल करते हैं जिन्होंने क्रांति को आकार दिया और राजनीतिक प्रक्रियाओं में व्यक्तियों की भूमिका को समझने के लिए इसके निहितार्थों पर चर्चा की।

मैनकुर ओल्सन (1965) द्वारा **"द लॉजिक ऑफ कलेक्टिव एक्शन: पब्लिक गुड्स एंड द थ्योरी ऑफ ग्रुप्स"**: ओल्सन का काम सामूहिक कार्रवाई सिद्धांत को पेश करके व्यवहार क्रांति में एक मूलभूत योगदान प्रदान करता है। वह विश्लेषण करता है कि कैसे समूहों में व्यक्ति सामूहिक वस्तुओं में योगदान देने या उनसे लाभ उठाने में अपने स्वार्थों का पीछा करते हैं। समूह सहयोग और समन्वय की चुनौतियों पर पुस्तक की अंतर्दृष्टि ने राजनीतिक व्यवहार और रुचि समूह की गतिशीलता के अध्ययन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है।

एंथनी डाउन्स द्वारा "**एन इकोनॉमिक थ्योरी ऑफ़ डेमोक्रेसी**" (1957): डाउंस का अभूतपूर्व कार्य राजनीति विज्ञान में तर्कसंगत विकल्प सिद्धांत का परिचय देता है। यह सिद्धांत मानता है कि व्यक्ति अपनी उपयोगिता को अधिकतम करने के लिए लागत और लाभ को तौलकर निर्णय लेते हैं। डाउंस इस अवधारणा को मतदाता व्यवहार, राजनीतिक दलों और नीति विकल्पों को समझाने के लिए लागू करता है। उनके विचारों का चुनावी गतिशीलता और नीतिगत परिणामों को समझने पर गहरा प्रभाव पड़ा है।

गैब्रियल बादाम और सिडनी वर्बा द्वारा "**द सिविक कल्चर: पॉलिटिकल एटीट्यूड एंड डेमोक्रेसी इन फाइव नेशंस**" (1963): बादाम और वर्बा इस प्रभावशाली अध्ययन में राजनीतिक संस्कृति और व्यवहार के अंतर्संबंध का पता लगाते हैं। वे विभिन्न देशों में नागरिकों के राजनीतिक दृष्टिकोण और लोकतांत्रिक प्रथाओं के बीच संबंधों की जांच करते हैं। पुस्तक राजनीतिक भागीदारी और स्थिरता को आकार देने में नागरिक दृष्टिकोण की भूमिका पर प्रकाश डालती है, जो व्यक्तिगत धारणाओं और विश्वासों पर क्रांति के फोकस में योगदान करती है।

डैनियल कन्नमैन द्वारा "**थिंकिंग, फास्ट एंड स्लो**" (2011): यद्यपि व्यवहार क्रांति के दशकों बाद प्रकाशित, कन्नमन का काम मानव निर्णय लेने की प्रक्रियाओं की जांच करने के लिए व्यवहार संबंधी अंतर्दृष्टि पर आधारित है। वह दो संज्ञानात्मक प्रणालियों की अवधारणा का परिचय देता है: सहज और विचारशील सोच। संज्ञानात्मक पूर्वाग्रहों और अनुमानों की उनकी खोज का राजनीतिक व्यवहार और सार्वजनिक नीति विकल्पों को समझने पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

जॉन जैलर द्वारा "**द नेचर एंड ओरिजिन्स ऑफ मास ओपिनियन**" (1992): ज़ैलर की पुस्तक जनमत निर्माण का एक व्यापक मॉडल विकसित करने के लिए मनोवैज्ञानिक और राजनीति विज्ञान सिद्धांतों का संश्लेषण करती है। वह राजनीतिक दृष्टिकोण को आकार देने में सूचना प्रसंस्करण, मीडिया प्रभाव और व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों की भूमिका पर जोर देते हैं। ज़ैलर के काम ने यह समझने में योगदान दिया है कि मीडिया संतृप्ति के युग में व्यक्ति राजनीतिक जानकारी को कैसे संसाधित करते हैं।

केनेथ एरो द्वारा "**सामाजिक विकल्प और व्यक्तिगत मूल्य**" (1951): सामाजिक चयन सिद्धांत में एरो का कार्य व्यक्तिगत प्राथमिकताओं को सामूहिक निर्णय में एकत्रित करने की चुनौतियों का पता लगाता है। उनका "एरो की असंभवता प्रमेय" एक निष्पक्ष और तर्कसंगत मतदान

प्रणाली बनाने में अंतर्निहित कठिनाइयों को प्रदर्शित करता है। इस सैद्धांतिक योगदान का लोकतांत्रिक निर्णय लेने की जटिलताओं को समझने में निहितार्थ है।

राजनीति विज्ञान पर प्रभाव

राजनीति विज्ञान पर व्यवहारिक क्रांति का प्रभाव गहरा रहा है, जिसने क्षेत्र की कार्यप्रणाली, अनुसंधान फोकस और सैद्धांतिक दृष्टिकोण को बदल दिया है। पारंपरिक संस्थागतवाद से व्यवहारिक परिप्रेक्ष्य में इस बदलाव ने महत्वपूर्ण परिवर्तन और योगदान लाए, जिन्हें निम्नानुसार संक्षेप में प्रस्तुत किया जा सकता है:

अनुभवजन्य मोड़: व्यवहारिक क्रांति ने अनुभवजन्य अनुसंधान को राजनीति विज्ञान में सबसे आगे ला दिया। विद्वानों ने राजनीतिक व्यवहार को समझने के लिए व्यवस्थित डेटा संग्रह, मात्रात्मक विश्लेषण और प्रयोग का उपयोग करना शुरू किया। अनुभवजन्य साक्ष्य पर इस जोर ने क्षेत्र की विश्वसनीयता को बढ़ाया और अधिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विकास में योगदान दिया।

व्यक्ति-केंद्रित विश्लेषण: क्रांति ने राजनीतिक संरचनाओं और संस्थानों के अध्ययन से ध्यान हटाकर राजनीतिक संदर्भ में व्यक्तिगत और समूह व्यवहार की जांच करने पर ध्यान केंद्रित किया। इस परिवर्तन ने शोधकर्ताओं को राजनीतिक अभिनेताओं की प्रेरणाओं, प्राथमिकताओं और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में गहराई से जाने की अनुमति दी, जिससे राजनीतिक घटनाओं की अधिक सूक्ष्म समझ पैदा हुई।

तर्कसंगत विकल्प सिद्धांत: तर्कसंगत विकल्प सिद्धांत की शुरूआत व्यवहारिक क्रांति की एक पहचान थी। यह सिद्धांत मानता है कि व्यक्ति लागत और लाभ को तौलकर तर्कसंगत निर्णय लेते हैं। यह राजनीतिक विश्लेषण की आधारशिला बन गया है, जो मतदान व्यवहार, पार्टी प्रतिस्पर्धा और नीति विकल्पों पर शोध को प्रभावित कर रहा है।

मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि: मनोविज्ञान से अंतर्दृष्टि को शामिल करते हुए, क्रांति ने राजनीतिक वैज्ञानिकों को राजनीतिक व्यवहार को आकार देने वाली संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं, पूर्वाग्रहों और अनुमानों का पता लगाने में सक्षम बनाया। इस एकीकरण ने इस बात की समझ को गहरा कर दिया है कि व्यक्ति कैसे जानकारी संसाधित करते हैं, विकल्प चुनते हैं और राजनीतिक दृष्टिकोण कैसे बनाते हैं।

जनता की राय और मतदान व्यवहार: व्यवहारिक दृष्टिकोण ने जनता की राय और मतदान व्यवहार के अध्ययन में क्रांति ला दी। विद्वान अब यह विश्लेषण कर सकते हैं कि व्यक्ति जानकारी को कैसे संसाधित करते हैं, राजनीतिक दृष्टिकोण कैसे बनाते हैं और मतदान संबंधी

निर्णय कैसे लेते हैं। इससे चुनावी नतीजों की अधिक सटीक भविष्यवाणियाँ और मतदाता प्रेरणाओं की समृद्ध समझ विकसित हुई।

रुचि समूह की गतिशीलता: क्रांति ने रुचि समूह की गतिशीलता की जांच करने के लिए नए लेंस प्रदान किए। शोधकर्ता विश्लेषण कर सकते हैं कि व्यक्ति कैसे समूहों में शामिल होते हैं, संसाधन जुटाते हैं और नीतिगत निर्णयों को प्रभावित करते हैं। इससे सामूहिक कार्रवाई और पैरवी की जटिलताओं को उजागर करने में मदद मिली।

नीति विश्लेषण: व्यवहार संबंधी अंतर्दृष्टि का नीति विश्लेषण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है। यह समझना कि व्यक्ति नीति परिवर्तन, निर्धारण और प्रोत्साहनों पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं, ने वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए सार्वजनिक नीतियों के डिजाइन और कार्यान्वयन को प्रभावित किया है।

निष्कर्ष:

राजनीति विज्ञान में व्यवहारिक क्रांति ने एक महत्वपूर्ण मोड़ ला दिया जिसने राजनीति के अध्ययन और समझ के तरीके में क्रांति ला दी। इस परिवर्तनकारी अवधि ने पारंपरिक संस्थागत विश्लेषण से ध्यान हटाकर राजनीतिक संदर्भों के भीतर व्यक्तिगत और समूह व्यवहार की गहन खोज पर ध्यान केंद्रित किया। इस प्रतिमान बदलाव का प्रभाव गहरा रहा है, कार्यप्रणाली, सिद्धांतों और राजनीतिक जांच की प्रकृति को नया आकार दिया गया है। क्रांति की विरासत इसके द्वारा उत्प्रेरित अनुभवजन्य मोड़ में स्पष्ट है, क्योंकि विद्वानों ने राजनीतिक व्यवहार की जटिलताओं को उजागर करने के लिए तेजी से व्यवस्थित डेटा संग्रह और मात्रात्मक विश्लेषण की ओर रुख किया। तर्कसंगत विकल्प सिद्धांत एक आधारशिला के रूप में उभरा, जो विभिन्न राजनीतिक संदर्भों में व्यक्तियों की तर्कसंगत निर्णय लेने की प्रक्रियाओं को समझने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है। इसके अलावा, मनोवैज्ञानिक अंतर्दृष्टि के समावेश ने इस बात की गहरी समझ पैदा की कि कैसे संज्ञानात्मक प्रक्रियाएं, पूर्वाग्रह और भावनाएं राजनीतिक दृष्टिकोण और कार्यों को आकार देती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

1. कैंपबेल, ए. (1969)। "व्यवहारिक क्रांति और राजनीति विज्ञान पर इसका प्रभाव।" अमेरिकी राजनीति विज्ञान समीक्षा, 63(4), 991-1017।
2. ओल्सन, एम. (1965)। "सामूहिक कार्रवाई का तर्क: सार्वजनिक सामान और समूहों का सिद्धांत।" हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
3. डाउन्स, ए. (1957)। "लोकतंत्र का आर्थिक सिद्धांत।" हार्पर और रो.

4. बादाम, जी.ए., और वर्बा, एस. (1963)। "द सिविक कल्चर: पॉलिटिकल एटीट्यूड एंड डेमोक्रेसी इन फाइव नेशंस।" प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस.
5. कन्नमैन, डी. (2011)। "सोच, तेज़ और धीमी।" फर्रार, स्ट्रॉस और गिरौक्स।
6. ज़ैलर, जे. (1992)। "मास ओपिनियन की प्रकृति और उत्पत्ति।" कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.
7. एरो, के.जे. (1951)। "सामाजिक विकल्प और व्यक्तिगत मूल्य।" येल यूनिवर्सिटी प्रेस।